■ भारत डोगरा

सर्द रातें, भूखे पेट

सर्द रातों में पेट की क्षुधा को शांत करने का कोई उपाय अभी हो नहीं पाया

मऊ प्रखंड के पाठा क्षेत्र में स्थिति दिनोंदिन कठिन होती जा रही है। पाठा क्षेत्र यानि पठारी क्षेत्र। वर्ष 2015 के आरंभ में पहले रबी की फसल असामयिक वर्षा/ओलावृष्टि से नष्ट हुई तो खरीफकी फसल भीषण सूखे से नष्ट हो गई। इसके बाद रबी की फसल की बुआई मऊ प्रखंड के पाठा क्षेत्र में मात्र 5 प्रतिशत के आसपास सिमट गई है। दूर-दूर खाली वीरान खेत नज़र आते हैं। जहां खेत में गेंहू व चने की हरियाली नज़र आती थी, वहां मिट्टी उड़ रही है। वर्षा की उम्मीद में अधिकतर किसानों ने जमीन को जोत तो दिया था, पर सूखे का प्रकोप इतना रहा कि बुआई नहीं हो सकी।

पकंपाती सर्दी हो तो भूख बढ़ती है। चित्रकूट जिले (उत्तर प्रदेश) के छरहरा गांव (मऊ प्रखंड) में हाल के दिनों में सर्दी तेजी से बढ़ी है। विशेषकर रातें तो बहुत ठंडी हो गई हैं। पर इन सर्द रातों में पेट की क्षुधा को शान्त करने का कोई उपाय अभी हो नहीं पाया है। भूख और कुपोषण की समस्या तो बढ़ती ही जा रही है।

वैसे तो चित्रकूट जिले की मुख्य ख्याति एक तीर्थ-स्थान के रूप में दूर-दूर तक है, पर इस समय यहां के अनेक गांवों में मुख्य चिंता किसी तरह अपना पेट भरने की है। छरहरा गांव की भी यही स्थिति है। सर्द रात को मां बच्चों को अधपेट भोजन खिला कर किसी तरह सुलाने की कोशिश करती है। जरूरी बात है कि मां ने स्वयं इससे भी कम खाया है, या भूखे पेट ही सो गई है।

चारों ओर अंधेरा है। छरहरा में बिजली अभी तक नहीं पंहुची है। पेट भूखे हैं। सर्दी बढ़ रही है। रजाई व कंबल का अभाव है। कथरी और पुआल का सहारा है। अलाव जलाकर लोग आसपास पसर गए हैं। भोजन की गर्मी तो मिली ही नहीं शायद आग की गर्मी से ही नींद आ जाए। लेकिन नहीं। पेट की भूख की अपनी मांग है। रात भूख से कुलबुलाते हुए गुजरती है। अब सुबह हुई है। एक नए दिन का आरंभ। यानि एक नया संघर्ष कि आज की रोटी का जुगाड़ कैसे होगा।

मऊ प्रखंड के पाठा क्षेत्र में स्थिति दिनोंदिन कठिन होती जा रही है। पाठा क्षेत्र यानि पठारी क्षेत्र। वर्ष 2015 के आरंभ में पहले रबी की फसल असामयिक वर्षा/ओलावृष्टि से नष्ट हुई तो खरीफ की फसल भीषण सूखे से नष्ट हो गई। इसके बाद रबी की फसल की बुआई मऊ प्रखंड के पाठा क्षेत्र में मात्र 5 प्रतिशत के आसपास सिमट गई है। दूर-दूर खाली वीरान खेत नज़र आते हैं। जहां खेत में गेंहू व चने की हरियाली नज़र आती थी, वहां मिट्टी उड़ रही है। वर्षा की उम्मीद में अधिकतर किसानों ने जमीन को जोत तो दिया था, पर सूखे का प्रकोप इतना रहा कि बुआई नहीं हो सकी।

छरहरा के विजय दुबे बताते हैं, पहले खरीफ में खर्च किया, पर फसल कुछ नहीं मिली। अब रबी में भी जुताई पर खर्च किया, ट्रैक्टर और डीजल पर खर्च किया, पर कुछ प्राप्त नहीं होगा। इस तरह किसान कर्जग्रस्त होते जा रहे हैं।

छरहरा के लगभग सभी परिवारों में अपने खेत का अनाज, दलहन समाप्त हो चुका है। अब वे बाजार से खरीद कर ही भोजन कर सकते हैं। पेटभर रोटी-नमक तक दो समय तक सब को नहीं मिल पा रहा है, जबकि दाल का पकना तो लगभग समाप्त ही हो गया है। सब्जी के नाम पर बस थोड़े से आलू कभी-कभी मिल जाते हैं। पशुओं के लिए चारे का गंभीर संकट है। अत: दूध की उपलब्धि भी अब नहीं के बराबर ही है। इतनी गंभीर स्थिति के बावजूद अभी यहां मनरेगा व सूखा-राहत का कोई कार्य सरकार ने आरंभ नहीं किया है।

ऐसी ही स्थिति अरवारी नौड़िया गांव की भी है - एक ओर भूख व कुपोषण की निरंतर विकट होती स्थिति और दूसरी ओर राहत का अभाव। खरीफ की फसल के नष्ट हाने की क्षतिपूर्ति तो इन गांवों में अभी मिली नहीं है पर बैंकों से कर्ज वसूली के नोटिस इस गंभीर आपदा के समय भी मिल रहे हैं। अरवारी नौड़िया में इस कारण गांववासियों की कठिनाईयां और बढ़ गई हैं कि यहां जल-संकट भी विकट हो रहा है। हैंड पंप जवाब दे रहे हैं। कुंओं में पानी बहुत कम बचा है। तिस पर आने वाले महीनों में क्या स्थिति होगी यह सोच कर लोग कांप उठते हैं। गांववासियों को पानी कहां से मिलेगा और गांव के पशुओं को पानी कहां से मिलेगा, यह बड़ा सवाल गांव के सामने है।

भूखे-प्यासे पशु इस समय भी बहुत कमजोर नज़र आते हैं। उनकी मृत्यु दर भी सामान्य मृत्यु दर से कहीं अधिक है। किसी न किसी पशु की मृत्यु का समाचार लगभग प्रतिदिन ही मिलता रहता है। अरवारी नौड़िया जैसे गांवों के लिए तो अस्तित्व मात्र का सवाल है। गांव के शिक्षित युवक सत्यनारायण कौल कहते हैं, हमें स्वयं नहीं पता अगले कुछ महीनों का सामना हम कैसे कर पाएंगे?

इन गांवों से लोग बड़े पैमाने पर प्रवासी मजदूरी के लिए सूरत, राजकोट, मुम्बई की ओर पलायन तो कर रहे हैं, पर प्राय: उन्हें संतोषजनक रोजगार नहीं मिल रहा है। कोई मजदूरी न मिलने पर निराश होकर लौट रहा है, तो कोई बहुत बुरी तरह बीमार होकर। किसी को यात्रा के दौरान लूट लिया गया, तो किसी की दुर्घटना हो गई।

अत: केवल प्रवासी मजदूरी के सहारे लोगों को नहीं छोड़ा जा सकता है। इस समय जरूरत यह है कि बड़े पैमाने पर सूखा-राहत कार्य या फूड फॉर वर्क आरंभ किए जाएं जिसमें मिट्टी व पानी संरक्षण जैसे कार्यों के बदले में लोगों को तुरंत पर्याप्त अनाज दिया जाए या तुरंत मजदूरी दी जाए। यदि मनरेगा का कार्य उचित समय पर बड़े पैमाने पर व ठीक से होता तो इतनी विकट स्थिति न उत्पन्न होती। पर एक तो यह कार्य उपेक्षित हुआ दूसरे जब पहले किए गए काम की मजदूरी बहुत देर तक नहीं मिली तो लोगों का इससे भरोसा कम हो गया। अब सरकार को लोगों को तुरंत राहत देने वाला कार्य बड़े पैमाने पर व ईमानदारी से कार्यान्वित करना चाहिए जिसमें मजदूरी का भुगतान तुरंत कार्य के साथ-साथ होना चाहिए। इस राहत कार्य के मानदंड उदार होने चाहिए क्योंकि लोग पहले ही बहुत कमजोर हैं और बहुत कठिन श्रम करना उनके लिए संभव नहीं है। इसके साथ अन्य पोषण कार्यक्रमों व स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार जरूरी है।

इस क्षेत्र की प्रमुख सामाजिक संस्था अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के निदेशक भागवत प्रसाद ने बताया, वैसे तो यह क्षेत्र प्रतिकूल मौसम के दौर से कई वर्षों से गुजर रहा है, पर इस बार का संकट अभूतपूर्व लग रहा है और हम सब बहुत चिंतित हैं।

यहां के सबसे वरिष्ठ कार्यकर्ता गोपाल जी ने बताया कि वर्ष 1980 के सूखे में फूड फॉर वर्क के असरदार क्रियान्वयन से यहां सबसे निर्धन परिवारों के घर में भी काफी अनाज उपलब्ध हो गया था। उस समय फूड फॉर वर्क का समन्वय करने वाले गोपाल जी कहते हैं, इस समय तो उससे भी अधिक व्यापक प्रयास की जरूरत है।

(नोट: यह लेख इनक्लूसिव मीडिया-यू.एन.डी.पी. फैलोशिप 2015 के अंतर्गत लिखा गया।)